प्रो. नागेश दुबे

हमारा बुन्देलखण्ड

सम्पादक
सरोज गुप्ता
छाया चौकसे

(इस पुस्तक में प्रकाशित आलेख, लेखकों के अपने विचार हैं, इन विचारों से सम्पादक, प्रकाशक अथवा मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2015

द्वितीय संस्करण (संशोधित) : 2024

ISBN 978-81-19020-62-1

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 7291920186, 09350809192

www : anuugyabooks.com

शाखा कार्यालय : धर्मकांटा चौक, राष्ट्रीय राजमार्ग 57,
एम.बी.बी.एल कॉलेज रोड, बैरिया, मुजफ्फरपुर-842 003 बिहार

शाखा कार्यालय : बी-1171, द्वितीय तल,
ग्रीन फील्ड्स कॉलोनी, फरीदाबाद-121 010 हरियाणा

शाखा कार्यालय : 301, तृतीय तल, राधाकृष्ण अपार्टमेंट, सांई कॉलोनी,
स्टेशन रोड, चाईबासा, पश्चिमी सिंहभूम-833 201 झारखण्ड

मूल्य : 599 रुपये

आवरण :

राधेश्याम प्रजापति

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

HAMARA BUNDELKHAND

Collection of Essays ***edited by Dr. Saroj Gupta & Dr. Chhaya Chouksey***

अनुक्रम

द्वितीय संस्करण की भूमिका – डॉ. सरोज गुप्ता 9

प्रथम संस्करण की भूमिका – सुरेश आचार्य 13

बुन्देलखण्ड का परिचायक ग्रंथ–हमारा बुन्देलखण्ड – गंगाप्रसाद बरसैंया 15

अपनी बात – डॉ. सरोज गुप्ता 19

सम्पादकीय – डॉ. छाया चौकसे 23

खण्ड एक – कला एवं संस्कृति

1.	बुन्देलभूमि ऋषि-मुनियों की साधना स्थली	*–डॉ. सरोज गुप्ता*	27
2.	बुन्देलखण्ड का रंगमंच	*–रबीन्द्र दुबे (कक्का)*	35
3.	बुन्देलखण्ड का मार्शल आर्ट	*–भगवानदास रायकवार*	40
4.	बुन्देलखण्ड के लोक नाट्य एवं स्वाँग	*–भगवानदास रायकवार*	57
5.	बुन्देलखण्ड के स्थान-नाम	*–डॉ. कामिनी*	63
6.	कुण्डेश्वर धाम	*–गुणसागर सत्यार्थी*	67
7.	जिला टीकमगढ़ के प्रमुख दर्शनीय स्थल	*–हरि विष्णु अवस्थी*	70
8.	सागर जिले के दर्शनीय पर्यटन स्थल	*–डॉ. नागेश दुबे*	79
9.	छतरपुर जिले के दर्शनीय स्थल	*–डॉ. बहादुर सिंह परमार*	86
10.	पन्ना जनपद के पर्यटक स्थल	*–रामप्रकाश गुप्त*	93
11.	चित्रकूट	*–डॉ. कमलेश थापक*	97
12.	चित्रकूट जनपद का सोमनाथ मंदिर	*–डॉ. राहुल मिश्र*	99
13.	दतिया : पौराणिक एवं ऐतिहासिक दर्पण में	*–डॉ. सबीहा ताबीर*	102
14.	अरसठ तीर्थों का भानेज-सनकुँआ	*–डॉ. कामिनी*	106
15.	बुन्देलखण्ड का ज्योतिपुंज : ओरछा	*–हरिविष्णु अवस्थी*	109
16.	बुन्देलखण्ड के जैन तीर्थ	*–डॉ. कैलाश मड़बैया*	115
17.	कालिंजर का वास्तुशिल्प	*–राधाकृष्ण बुन्देली*	125
18.	उनाव बालाजी	*–हरीमोहन लाल श्रीवास्तव*	130

सागर जिले के दर्शनीय पर्यटन स्थल

– डॉ. नागेश दुबे

बुन्देलखण्ड में सागर जिले का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। विन्ध्य पर्वतमाला और घने वनों ने सागर अंचल को प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदान किया है। इस अंचल में बहने वाली बीना, धसान, सुनार, कोपरा, बामनेर तथा बेबस आदि नदियाँ उसे उर्वर बनाती रही हैं। सागर अंचल पाषाणयुगीन आदि मानवों की क्रीड़ा स्थली रहा है। ऐतिहासिक युग में यह भूभाग प्रमुख राजवंशों तथा मौर्य, शुंग, नाग, गुप्त, चन्देल, कलचुरि तथा परमारों के साम्राजय का अंग रहा है। सागर अंचल को सर्वाधिक महत्त्व गुप्त काल में प्राप्त हुआ। समुद्रगुप्त के समय एरण (प्राचीन ऐरिकेण) नामक स्थान जिसे अभिलेख में 'स्वभोग का महत्त्वपूर्ण' केन्द्र था।[1] गुप्तकालीन अवशेषों के लिए यह स्थान अत्यन्त विख्यात है।

छठी शताब्दी ईसवीं के पश्चात सागर जिले का इतिहास पुन: अन्धकार के गर्त में समाया हुआ है। नवमी शताब्दी ईसवी के पश्चात (बुन्देलखण्ड तथा त्रिपुरी) में दो नए राजवंशों चन्देल तथा कलचुरियों का उदय हुआ इनका अधिकार सागर क्षेत्र में पर्याप्त समय तक रहा। ग्याहरवीं शताब्दी ईसवी में परमारों ने सागर जिले का भू-भाग चन्देलों से छीन लिया। इस क्षेत्र पर मालवा के परमारों का शासन था। परन्तु पुन: चन्देलों ने अपना अधिकार इस भू-भाग पर स्थापित कर लिया।

बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी ईसवी में इस जिले के अलग-अलग भागों पर विभिन्न स्थानीय राजपूत वंशों ने राज्य किया। रहली के आसपास आभीर तथा गढपहरा पर दांगियों की सत्ता स्थापित हो गयी। तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी तक सागर जिले पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार रहा। पन्द्रहवीं शताब्दी ईसवी के उत्तरार्द्ध में सागर जिला गौड़ों के आधीन रहा। संग्रामशाह व रानी दुगावती के 52 गढ़ों में से दस गढ़ सागर जिले में स्थित हैं। इनमें गढपहरा, धामौनी, शाहगढ़, खिमलासा, देवरी, गौरझामर, राहतगढ़, इटावा, गढ़ाकोटा और रहली स्थित गढ़ (मुख्यालय) आते हैं।[2] गौड़ों के पश्चात मुगलों का अधिपत्य इस भू-भाग पर कायम हुआ सत्रहवीं शताब्दी ईसवी में सागर जिले के धामौनी पर बुन्देला शासक जुझारसिंह का अधिकार था, जुझारसिंह की मृत्यु के पश्चात इस क्षेत्र पर चम्पतराय का अधिकार हुआ। चम्पतराय के पश्चात उनके पुत्र बुन्देला नरेश छत्रसाल ने सागर जिले के धामौनी, खिमलासा, गढ़कोटा आदि स्थानों को मुगलों से छीन लिया और अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। महाराज छत्रसाल ने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में इलाहाबाद के मुगल आक्रमण में पेशवा बाजीराव द्वारा सैन्य सहायता दिये जाने के फलस्वरूप अन्य दूसरे

जिलों के साथ, सागर जिला भी पेशवा को सौंप दिया। अतः सागर जिले पर मराठों का शासन स्थापित हुआ।

सन् 1818 के पश्चात सागर जिला ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित हुआ। अँग्रेजी सेना ने सागर, एरण, खुरई, खिमलासा, जैसीनगर, रहली, धामौनी आदि प्रमुख स्थानों पर अपना अधिकार कर लिया। सन् 1861 में प्रशासनिक व्यवस्था के लिए सागर जिले को नागपुर से मिला दिया गया और सागर-नर्मदा प्रदेश, मध्यप्रान्त का एक भाग बन गया। यह व्यवस्था 1856 तक नए मध्यप्रदेश राज्य के पुनर्गठन होने तक बनी रहीं।[3]

वर्तमान में सागर जिले का भू-भाग मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है। यहाँ 23°11' एवं 24°27' उत्तरी अक्षांश और 78°4' 79°21' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जिले की उत्तरी सीमा से लगा हुआ उत्तरप्रदेश का झाँसी जिला, दक्षिणी सीमा पर नरसिंहपुर और रायसेन जिले पश्चिमी सीमा पर विदिशा जिला और पूर्वी सीमा पर दमोह जिला है। उत्तर पूर्व और उत्तर पश्चिम की ओर यह जिला क्रमशः छतरपुर और गुना जिले से लगा हुआ है सागर जिले का क्षेत्रफल 3961 वर्गमील (10269 वर्गकिमी.) है।[4] विशाल मालवा के पठार के दक्षिणी-पूर्वी किनारे पर यह जिला स्थित है।[5] सागर जिले का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत शृंखला की श्रेणियों से आच्छादित है[6] विन्ध्यपर्वत को प्राचीन काल के सात मुख्य पर्वतों में से एक कहा गया है।[7] विन्ध्य पर्वत शृंखला सागर, बंडा, रहली, नरयावली, आदि क्षेत्रों में विस्तीर्ण है। जिले का सबसे ऊँचा स्थान नाहरमऊ है। सागर जिले की इन पर्वत मालाओं में प्रागैतिहासिक काल के शैलाश्रय व उनमें शैलचित्र प्रभूत संख्या में प्राप्त हुए हैं। सागर जिले के आबचन्द, नरयावली, बरोदा आदि स्थानों से ये चित्र प्राप्त हुए हैं।[8] इन चित्रों में जंगली पशु, आखेट, युद्ध, परिवार, उत्सव, यात्रा आदि के विविध दृश्य चित्रित हुए हैं। सागर जिले के भू-भाग से प्राचीन काल का प्रमुख राजमार्ग गुजरता था। यह राजमार्ग उज्जयिनी, विदिशा, सांची होता हुआ जिले के प्रमुख नगर एरण से गुजरता था और भरहुत होता हुआ, कौशाम्बी तक जाता था।[9]

पुरातत्वीय एवं सांस्कृतिक वैभव से सम्पन्न सागर जिला बुन्देलखण्ड का हृदयस्थल है। सागर में पर्यटन के पर्याप्त अवसर होने के बावजूद पर्यटक स्थलों के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं अन्य सुविधाओं के अभाव में उनको यथोचित स्थान नहीं मिल सका है। सागर जिले में ऐतिहासिक किले, महल, मन्दिर, मस्जिद, तालाब, शैलाश्रय जलप्रपात, वन्य अभ्यारण्य, विशाल बाँध, विश्वविद्यालय तथा संग्रहालय हैं जिन्हें पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। जो पर्यटकों को निश्चित रूप से आकर्षित कर सकते हैं। जिनका विवरण निम्नलिखित रूप से है–

प्रागैतिहासिक शैलाश्रय

प्रागैतिहासिक शैलाश्रय तथा उनमें आदि मानवों द्वारा की गयी चित्रकला पर्यटकों के लिए अत्यन्त आकर्षण का केन्द्र होती है। सागर क्षेत्र में भी कई स्थानों जैसे–खानपुर आबचन्द, नरयावली, गढौली, मौलाली, कड़ता बीला, जरारा, जैरई, भापेल, पगारा,

तालगुवारी, गौरीदाँत, धामौनी (मडैया), पाथरी, कोटा, बरौदिया, हीरापुर के समीपवर्ती चित्रित शैलाश्रय हैं।[10] इन स्थानों में प्रागैतिहासिक शैलाश्रय विद्यमान हैं, जिनमें ततकालीन मानव व पशु जगत से सम्बन्धित विविध पक्ष चित्रित हुए हैं। इनको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए प्रचार-प्रसार के साथ-साथ इन तक पहुँच मार्ग तथा पर्यटन सम्बन्धी अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी अत्यावश्यक है।

मन्दिर

सागर अंचल की धार्मिक परम्परा महान है। यहाँ प्राचीनकाल से ही वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर जैन तथा बौद्ध सम्प्रदाय के अनुयायी धार्मिक सद्भाव से निवास करते थे। मध्यकाल में मुस्लिम धर्मालम्बी भी अपने धर्म का अनुसरण करते रहे। सभी ने अपने पूजा स्थलों के रूप में मन्दिरों व मस्जिदों का निर्माण किया। जो सागर जिले के विभिन्न स्थलों पर दृष्टव्य हैं। ये मन्दिर व मस्जिदें अपनी स्थापत्य तथा मूर्तिकला के कारण उत्कृष्ट पर्यटन स्थल के रूप में स्थान पा सकते हैं इन मन्दिरों में प्रमुख हैं–

एरण के वैष्णव मन्दिर–प्राचीन पुरास्थल एरण में गुप्तकालीन महाविष्णु, महावराह, नृसिंह के मन्दिरों के अलावा प्रभूत संख्या में विभिन्न युगों की कलाकृतियाँ दृष्टव्य हैं। यह स्थल बीना नदी के किनारे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण रमणीक स्थल है। खुरई से लगभग 20 कि.मी. दूर स्थित इस महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल तक पहुँचने के मार्ग को सुगम करने की आवश्यकता है। यदि पर्यटन की अन्य सुविधाएँ इस स्थल पर हो जाएँ तो यह जिले का सबसे उत्कृष्ट पर्यटन स्थल बन सकता है।

शिवमन्दिर, मढ़ौली–यह मन्दिर ग्राम मढ़ौली में गाँव के बाहर नेरन नदी के निकट विद्यमान है। सागर जिले में परमार कालीन मन्दिरों की श्रृंखला में यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। वर्तमान में मन्दिर के भग्नावशेष ही दृष्टव्य हैं, परन्तु यह उत्कृष्ट कला का नमूना है। जिसे देखकर पर्यटक आत्ममुग्ध हो जाते हैं।

विष्णु मन्दिर, विनायका–ग्राम विनायका सागर से लगभग 30 कि.मी. दूर स्थित बण्डा से लगभग 20 कि.मी. उत्तर पश्चिम दिशा में विद्यमान है। यहाँ पर लगभग 9-10वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित अत्यन्त भव्य मन्दिर के भग्नावशेष विद्यमान हैं। यह मन्दिर भी अपने स्थापत्य तथा उत्कृष्ट मूर्ति शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।[11]

सूर्य मन्दिर, रहली–रहली नगर में स्थित सूर्य मन्दिर अपनी कला की उत्कृष्टता के लिए सुविख्यात है। लगभग 9-10वीं शताब्दी ईसवी में इस मन्दिर का निर्माण किया गया होगा। वर्तमान में यह मन्दिर अपने मूल स्वरूप में नहीं है। इस मन्दिर में शैव, शाक्त, वैष्णव, सौर तथा गाणपत्य सम्प्रदाय की विविध प्रतिमाओं का संकलन है। यह मन्दिर एक उत्कृष्ट दर्शनीय स्थल है।[12]

गढ़ौली (खुरई) का शिव मन्दिर–खुरई-मालथौन मार्ग पर स्थित ग्राम गढ़ौली में विद्यमान शिव मन्दिर भी स्थापत्य तथा कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। पश्चिमोमुखी यह मन्दिर पर्यटन की दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है।

हरसिद्धि देवी मन्दिर, रानगिर–यह मन्दिर सागर देवरी मार्ग पर 37वें कि.मी. से 8 कि.मी. भीतर देहार नदी के सुरभ्य तट पर स्थित है। यह मन्दिर प्रसिद्ध सिद्धपीठ, माना जाता है। यहाँ मेले के आयोजन होते हैं। यह मन्दिर देवी के उपासकों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

शिव मन्दिर, पाटन–राहतगढ़ दुर्ग के निकट ग्राम पाटन में परमार कालीन यह मन्दिर उत्कृष्ट कला के लिए जाना जाता है। यह नगर शैली का मन्दिर है। इसे सम्भवतः 13वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित किया गया था।

बीना-बारहा के जैन-मन्दिर–बीना बारहा जैन अतिशय क्षेत्र है, यह स्थान देवरी से 7 कि.मी. दूर स्थित है। यहाँ के मन्दिर सुखचैन नदी के किनारे स्थित है। शान्ति नाथ मन्दिर, महावीर मन्दिर की प्रतिमाएँ भव्य एवं उत्कृष्ट हैं। जैन मन्दिर स्थापत्य एवं मूर्ति शिल्प के लिए यह एक विख्यात केन्द्र है।[13]

पटनागंज, रहली के जैन मन्दिर–पटनागंज भी जैनों का अतिशय क्षेत्र है। यह रहली नगर में ही स्थित है। यहाँ अनेक प्राचीन मन्दिर है। यहाँ अन्य भव्य प्रतिमाओं के साथ ही सहस्त्र फणों से युक्त पार्श्वनाथ की प्रतिमा उत्कृष्ट है।

पजनारी का जैन मन्दिर–पजनारी का अतिशय क्षेत्र है। बण्डा तहसील मुख्यालय से बण्डा बांदरी मार्ग पर लगभग 8 कि.मी. दूर स्थित पजनारी का यह मन्दिर स्थल बाकरई नदी के तट के निकट एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। यह सोलहवीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर है।

ईशुरवारा का जैन मन्दिर–यह भी जैन अतिशय क्षेत्र है सागर खुरई मार्ग पर स्थित किसनपुरा से तीन कि.मी. दूर पहाड़ी पर यह मन्दिर विद्यमान है। यह 17वीं शताब्दी ईसवी का भव्य मन्दिर है।

सागर क्षेत्र के जैन मन्दिर–सागर नगर में भव्य जैन मन्दिर विद्यमान हैं मन्दिरों में प्राचीन जैन प्रतिमाएँ संग्रहीत हैं चौधरन बाई जैन मन्दिर, मोराजी मन्दिर, गौराबाई मन्दिर तथा मंगलगिरी जैन मन्दिर आदि इन सभी मन्दिरों में दर्शनार्थ श्रद्धालु देश एवं विदेशों से आते हैं।

सागर नगर के अन्य विख्यात मन्दिर–नगर में तथा समीपवर्ती स्थानों पर प्रसिद्ध मन्दिर दृष्टव्य हैं जो अपने स्थापत्य एवं मूर्ति शिल्प के साथ-साथ सिद्धक्षेत्र के लिए दर्शनार्थियों की श्रृद्धास्थल के रूप में जाने जाते हैं, इनमें गढ़ पेहरा के हनुमान तथा अनगढ़ देवी मन्दिर परेड मन्दिर, भूतेश्वर मन्दिर, शनि मन्दिर, वृन्दावन बाग मन्दिर, रामबाग मन्दिर, चकराघाट के मन्दिर, बाघराज मन्दिर, इतवारी टौरी स्थित देवी मन्दिर आदि उल्लेखनीय है।

सागर जिले में स्थित किले–किलों के निर्माण की परम्पराएँ प्राचीन काल से चली आ रही हैं। सिंधु-सभ्यता से लेकर 19वीं शताब्दी ईसवी तक विभिन्न प्रकार के किलों के निर्माण की परम्परा देखने को मिली हैं। सागर जिला भी इस परम्परा से अछूता नहीं रहा है यहाँ पर शासन करने वाले मुस्लिम, गौंड, दांगी व मराठा शासकों के द्वारा निर्मित किलों के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। इन शासकों के भी अनेक किले सागर जिले के चारों ओर दृष्टव्य हैं। मुस्लिम शासकों द्वारा निर्मित तीन दुर्गों के अवशेष, खिमलासा, राहतगढ़ तथा

मालथौन में स्थित है।[14] खिमलासा का किला सागर से लगभग 65 कि.मी. राहतगढ़ का किला 35 किमी. मालथौन का किला लगभग 58 किमी. दुर स्थित है। मुस्लिम शासकों के पश्चात शासन करने वाले गौंड व दांगी शासकों द्वारा भी अपने किलों का निर्माण कराया गया। सागर से उत्तरी दिशा में गढ़पहरा, धामौनी, पिठौरिया, मरिया डोह दक्षिण दिशा में गौरझमर, पूर्व दिशा में गढ़ाकोटा, पश्चिम दिशा में खुरई तथा एरण नामक स्थलों पर किलों का निर्माण किया गया। अन्य किलों में शाहगढ़ जैसीनगर, बरौदिया, हीरापुर, कटनैलगढ़ विलहरा, रजवांस, नरयावली, दुगाहा, गढ़ोला, बरेठा में किलों के अवशेष दृष्टव्य हैं। मराठों के शासन काल में मराठा शासकों ने सागर में तालाब के किनारे किले का निर्माण किया। इसके अतिरिक्त पूर्व दिशा में गढ़ाकोटा, सानौषा, रहली, पश्चिम में खुरई तथा कंजिया उत्तर में विनायका, दक्षिण दिशा में देवरी तथा मढौला के मराठा कालीन किले दृष्टवय हैं। सम्पूर्ण सागर जिले इस प्रकार 32 किलो के अवशेष प्राप्त होते हैं। साथ-साथ अनेक छोटी-छोटी गढ़ी के अवशेष चारों ओर प्राप्त होते हैं। सागर जिले में स्थित इन किलों में गढ़पहरा का किला तथा इसमें स्थित हनुमान मन्दिर, अनगढ़ देवी मन्दिर, शीशमहल, मोतीताल इत्यादि के कारण ऐतिहासिक तथा धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।[15] गढ़पहरा के अतिरिक्त धामौनी का किला तथा समीप स्थित दरगाह के कारण धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व है। राहतगढ़ का किला अपने विराट स्थापत्य के कारण दर्शनीय पर्यटन स्थल है।[16]

मस्जिदें तथा दरगाह–सागर जिले में प्राय: प्रत्येक नगर व कस्बों में मुस्लिम समाज की मस्जिदें विद्यमान हैं। इनमें मुस्लिम स्थापत्य को देखा जा सकता है। सागर नगर में ही कई मस्जिदें दृष्टव्य हैं। इनमें कटरा बाजार में स्थित जामामस्जिद तथा शनीचरी टौरी में स्थित घंसु-मुशीं मस्जिद सबसे उत्कृष्ट है। दो ऊँची मीनारों वाली ये मस्जिदें मुस्लिम स्थापत्य का अनुपम उदाहरण है। राहतगढ़ तथा खिमलासा के किलों में भी मध्यकालीन मस्जिद दृष्टव्य है। सागर नगर में निकट स्थित पीली कोठी दरगाह तथा धामौनी में स्थित दरगाह आंचलिक आस्था के प्रमुख केन्द्र के रूप में विख्यात हैं।

नौरादेही अभ्यारण–नौरादेही अभ्यारण सागर-दमोह एवं नरसिंहपुर के आंशिक वन क्षेत्रों को सम्मिलित कर बनाया गया है। अभ्यारण्य का कुल भौगोलिक क्षेत्र 1347 वर्ग किमी. है सागर से देवरी महाराजपुर होते हुए झमारा से वनमार्ग द्वारा अभ्यारण पहुँचा जा सकता है। सागर से इसकी दूरी 108 किमी. है। यह अभ्यारण कृष्ण मृग के लिए प्रसिद्ध है। एवं इनके अतिरिक्त मुख्यत: नीलगाय, चिंकारा, चीतल, सांभर पाए जाते हैं। इनके साथ ही सुदुर वन क्षेत्र में भालू, सुअर, सोन कुत्ते, तेन्दुआ तथा शेर भी बहुतायत में पाए जाते हैं इस अभयारण्य के अन्दर 69 गाँवों में से 64 गाँव आबाद हैं तथा सीमा पर 58 गाँव स्थित हैं।

पर्यटन की दृष्टि से यहाँ पहुँच मार्ग तथा अन्य सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता है।

जलप्रपात–पर्यटन के लिए राहत गढ़ के निकट लगभग 50 फुट ऊँचा सुन्दर जलप्रपात हैं राहत जल प्रपात को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया गया है। जल प्रपात के नीचे तक जाने के लिए सीढ़ियाँ, ग्रिल एवं सुरक्षा हेतु रेलिंग भी बनाई गयी है। केन्टीन तथा

नौका विहार की सुविधा भी है। यहाँ पर और भी अन्य सुविधाएँ विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

तालाब–सागर का विशाल तालाब अपनी ऐतिहासिकता एवं अद्भुत सौन्दर्य के लिए विख्यात है। सागर का नामकरण भी इसी तालाब के कारण हुआ। इसी तालाब के चारों ओर सागर नगर बसा हुआ है। किवदंती के अनुसार इसे लाखा नामक बंजारे ने बनवाया था। यह एक रमणीक पर्यटन केन्द्र बन सकता है। विगत वर्षों में प्रशासन ने इसके सौन्दर्य को लौटाने का प्रयास किया है। परन्तु वह अपर्याप्त है। सागर के तालाब की श्रेष्ठतम पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है सागर तालाब के अतिरिक्त नवनिर्मित राजघाट बाँध, गढ़पहरा का मोतीताल बीलाबाँध, नरयावली, खुरई तथा सुरखी स्थित तालाबों को नौका विहार आदि की दृष्टि से विकसित किया जा सकता है।[17]

पुरातत्व संग्रहालय–पुरातत्वीय वैभव से सम्पन्न जिले के मुख्यालय सागर में दो संग्रहालय हैं। जिला पुरातत्व संग्रहालय तथा विश्वविद्यालय स्थित डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय, जिला पुरातत्व संग्रहालय वर्तमान में शेर बंगला सिविल लाईन में स्थित हैं। इस संग्रहालय में वैष्णव, शैव, शाक्त, गणपत्य, जैन तथा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित उत्कृष्ट लगभग चार सौ छियासी कला कृतियाँ संग्रहीत हैं। अधिकांश मूर्तियाँ लगभग ग्यारहवीं बारहवीं शताब्दी ईसवी की हैं। इस संग्रहालय को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किए जाने की आवश्यकता है।[18]

सागर विश्वविद्यालय स्थित हरी सिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में प्रभूत संख्या में प्राकऐतिहासिक, आद्यऐतिहासिक तथा ऐतिहासिक काल की दुर्लभ कला कृतियों, सिक्कों, अभिलेखों तथा चित्रों का संग्रह है।[19] संग्रहालय अपनी भव्यता के लिए विख्यात है, देशी व विदेशी पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं।

विश्वविद्यालय–सागर में स्थित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की स्थापना 1946 में हुई थी। यह म.प्र. का प्रथम विश्वविद्यालय है। विन्ध्य पर्वतमाला की पथरिया हिल्स पर स्थित विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण परिसर अत्यन्त विस्तृत है। यहाँ आने वाले विदेशी पर्यटकों ने इसकी प्राकृतिक स्थिति यहाँ की रमणीयता की सराहना की है। विश्व विद्यालय को शैक्षणिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से चार सितारा विश्व विद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय में लगभग 38 विभाग हैं। यहाँ का बॉटनीकल गार्डन, प्राणिविज्ञान संग्रहालय, ग्रन्थालय तथा छात्रावास परिसर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

सागर जिले में स्थित एरण मन्दिर परिसर धामौनी, खिमलासा, गढपेहरा, राहतगढ़ सहित सभी ऐतिहासिक एवं पुरातत्वीय महत्त्व के स्थल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित धरोहर हैं परन्तु ये विभागीय उदासीनता के चलते अपना महत्त्व खो रहीं हैं। इन बहुमूल्य धरोहरों के साथ होने वाली छेड़छाड़ का क्रम जारी रहा तो कथित रूप से संरक्षित इन किलों, महलों और मन्दिरों का अस्तित्व ही खतरे में है। सन्देह नहीं है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का उपमंडल कार्यालय ऐतिहासिक महत्त्व की धरोहरों को संरक्षित स्मारकों, किलों की हिफाजत एवं रखरखाव सम्बन्धित दायित्वों को लेकर निष्क्रिय

बना हुआ है। ऐसे में सागर जिले की वे सभी ऐतिहासिक धरोहरें उपेक्षित पड़ी हैं। जिन्हें उपमंडल कार्यालय, पुरातत्व विभाग द्वारा दुरुस्त रखना चाहिए। जबकि सच यह है कि पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग इन धरोहरों को संरक्षित रखने में विशेष कोशिश कभी नहीं करता है। जिससे प्राचीन बहुमूल्य धरोहरें लावारिश सी स्थिति में हैं। लगभग दो दशकों से शासन के पुरातत्व विभाग द्वारा सर्वेक्षण कार्य सम्पन्न नहीं हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक उत्कृष्ट कलाकृतियाँ संग्रहालय में संरक्षित किए जाने की नितान्त आवश्यकता हैं। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा निश्चित रूप से इनके संरक्षण के लिए समुचित उपाय करने होंगे, तभी इन्हें पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकेगा।

सागर जिले में पर्यटन की बहुत सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। खजुराहो की ओर जाने वाले देशी तथा विदेशी पर्यटकों को इन दर्शनीय स्थलों के भ्रमण करने के लिए आकर्षित किया जा सकता है। पर्यटन को बढ़ावा दिया जाने से देशी व विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकेगी, जिससे जिले की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है।

सन्दर्भ

1. राय बहादुर, हीरालाल, सागर सरोज, अलम्म ग्रन्थमाला, जबलपुर, 1988 पृ. 173
2. सागर जिला गजेटियर, भोपाल, 1970, पृ. 52-53
3. पी. राघवन, सागर विरासत और विकास, दिल्ली, 1992, पृ. 18
4. सागर जिला गजेटियर, 1970 भोपाल, पृ. 1
5. वही, पृ. 3
6. वही
7. मत्स्य पुराण, 57, 10-11
8. सागर जिला गजेटियर, पूर्वोल्लिखित, पृ. 4
9. दुबे नागेश, एरण की कला, सागर, 1997, पृ. 3
10. दुबे, नागेश, 'सागर क्षेत्र के शैलाश्रयों में चित्रित मानव जीवन के विविध पक्ष'–इण्डियन रॉक-आर्ट जर्नल, नागपुर, 2000, पृ. 43
11. राघवन पी., पूर्वोल्लिखित, पृ. 43
12. मिश्रा, मनीष सागर जिले का सांस्कृतिक इतिहास, सागर, 1988, पृ. 69-70
13. पारोचे, शिवकुमार, मध्यकालीन युग में सागर जिलम में जैन धर्म सागर, 2001, पृ. 65-66
14. अग्रवाल, रविन्द्र नाथ, सागर जिले से प्राप्त दुर्ग तथा उनकी स्थिति, गौर स्मारिका, 1987, पृ. 57-59
15. दुबे नागेश, 'गढ़पहरा : एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल, सागर की सांस्कृतिक विरासत', मानव विज्ञान विभाग में सेमिनार में प्रस्तुत शोधपत्र, 2002
16. गुरू, स्वप्ना, सागर संभाग के प्रसिद्ध ऐतिहासिक दुर्ग, मध्यप्रदेश सन्देश, भोपाल, अप्रैल 1989, पृ. 19-23
17. सागर जिला गजेटियर, पूर्वोल्लिखित पृ. 527
18. राघवन पी., पूर्वोल्लिखित, पृ. 91-92
19. सागर जिला गजेटियर, पूर्वोल्लिखित पृ. 525